P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचि पर प्रभाव का अध्ययन

अमित चन्द्रा
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग
प0 सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़,
बिलासपुर, भारत

बीना सिंह
शोध निर्देशक,
शिक्षा शास्त्र विभाग
प0 सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़,
बिलासपुर, भारत

सारांश

देष की आजादी के इतने वर्षो पश्चात् भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों का शैक्षिक विकास नहीं हो पाया है। अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों में यह और भी कम देखा गया है, तथा अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिला साक्षरता अन्य जातियों की अपेक्षा बहुत कम है। छत्तीसगढ़ में देखे तो अनुसूचित जनजाति की केवल 48.76 प्रतिशत महिलाएँ (2011 के अनुसार) ही शिक्षित हैं। समाज के समुचित विकास के लिए बालकों के साथ–साथ बालिकाओं की शिक्षा को महत्व दिया जाना आज की महती आवश्यकता है। अनुसूचित जनजाति समूहों का सामाजार्थिक स्तर कम है। अतः अनुसूचित जनजातियों के व्यक्तियों के सामाजार्थिक स्तर के विकास पर ध्यान दिया जाना होगा। शोध निष्कर्ष यह दर्शाते है कि अनुसूचित जनजाति के छात्राओं ने उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर पर विद्यार्थी नहीं मिले इसका कारण ग्रामीण परिवेष में अभिभावकों में शिक्षा के प्रति रूचि का अभाव, गांव में उचित शैक्षिक वातावरण का न होना, रूढ़िवादी, सामाजिक बुराईयॉ, अशिक्षा, गरीबी, कन्या शिक्षा के प्रति पालकों का नकारात्मक दृश्टिकोण एवं इस क्षेत्र की समसामयिक एवं आंतरिक वातावरण भी हो सकते है। शैक्षिक वातावरण का जनजातियों में न होने का कारण अशिक्षा, गरीबी और रूढि वादिता के तहत् पालकों में नकारात्मक दृष्टिकोण है। सामाजार्थिक स्तर का कोई भी प्रभाव बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि पर नहीं पड़ता है।

मुख्य शब्द : अनुसूचित जनजाति वर्ग की शिक्षा ।

प्रस्तावना

विश्व के जनजातीय मानचित्र में भारत का स्थान, अफ्रीका के बाद अंकित है। जनगणना 2011 के अनुसार छ.ग. में अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 78,22,902 है शिक्षा के क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिलाओं का प्रतिशत संतोशजनक नहीं है। चूँकि अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिला साक्षरता अन्य जातियों की अपेक्षा बहुत कम है। छत्तीसगढ़ में देखे तो अनुसूचित जनजाति की साक्षरता औसत 59.09 प्रतिशत है, जिसमें 69.67 प्रतिशत पुरुश तथा 48.76 प्रतिशत महिलाएँ (2011 के अनुसार) ही शिक्षित हैं। लड़कियों में स्कूल छोड़ने का प्रमाण भी अधिक है। जाति, वर्ग एवं लिंग भेदभाव के चलते अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिलाएँ शैक्षणिक सुविधाओं का पूर्ण उपभोग नहीं कर पाती हैं। भारत के ग्रामीण तथा शहरी इलाकों में अनुसूचित जनजाति वर्ग की महिलाओं का बहुत बडा हिस्सा गरीबी रेखा से निचे जीवन यापन करता हैं तो उनके समक्ष उच्च शिक्षा प्राप्त करना जटिल समस्या की तरह है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आज भी छत्तीसगढ़ राज्य के अनुसूचित जनजाति महिलाओं की साक्षरता दर केवल 48.76 प्रतिशत ही है। सरकार द्वारा इनके साक्षरता दर को बढाने हेतु अनेक प्रयत्न करने के बाद भी आदिवासी क्षेत्रों में साक्षर व्यक्तियों के प्रतिशत में आशातीत विकास एवं वृद्धि नहीं हो पा रही है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी संतोशजनक नहीं है। इस शोध में अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

शोध के उद्देश्य

1. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति ज्ञात करना।
2. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।
3. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक रूचि का पता लगाना।

4. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक रूचि पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव को ज्ञात करना।

ifjdYiuk,W

प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ है –

1. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि में उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।
2. अनुसूचित जनजातियों के छात्राओं की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।
3. अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।
4. अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक रूचि में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।

यह शोध जांजगीर जिले के डभरा विकासखंड के ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक षालाओं तक सीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process)

न्यादर्श (Sample)

इस शोध हेतु अनियत प्रतिदर्ष विधि से कक्षा 9वी एवं 10वीं में अध्ययनरत 98 छात्राओं को न्यादर्श हेतु चुना गया है, ये जांजगीर जिले के डभरा विकासखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में नियमित विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत है।

उपकरण (Tools)

1. सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी – आर.एल.भारद्वाज (SESS)
2. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण– स्वनिर्मित परीक्षण
3. शैक्षिक रूचि परीक्षण – एस.पी.कुलश्रेष्ठ

lkaf[;dh fo'ys"k.k **(Statistical Operation)**

ifjdYiuk Øekad & 01

उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि में उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation of the study)

सारणी क्रमांक & 01

समूह	N	M	Sd	Df	परिणाम
अनुसूचित जनजाति	98	45.74	5.314	114	उच्च सामाजिक स्तर का एक भी विद्यार्थी प्राप्त नहीं हुआ। परिकल्पना की पुष्टि नहीं होती है।

व्याख्या

उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर का 1 भी विद्यार्थी प्राप्त नही हुआ। अधिकांष छात्राओं का सामाजिक–आर्थिक स्तर मध्यम एवं कुछ छात्राओं का सामाजिक–आर्थिक स्तर निम्न पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 1 की पुष्टि नहीं होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 02

Lkewg	N	M		Sd		r	परिणाम
अनुसूचित जनजाति	98	56.206	51.034	13.5	13.5	0.1002	+ ve सहसंबंध

व्याख्या

अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्रदत्तों की गणना से सहसम्बन्ध गुणांक 0.1002 प्राप्त हुआ है। यह मान निम्न धनात्मक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है अतः परिकल्पना क्रमांक 02 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जावेगा।

सारणी क्रमांक – 03

Lkewg	N	M		Sd		r	परिणाम
vuqlwfpr tutkfr	98	46-587	39-38	12-9	6-77	- 0.106	- ve lglaca/k

व्याख्या

अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के प्रदत्तों की गणना से समसम्बन्ध गुणांक का मान –0.106 प्राप्त हुआ। यह मान अत्यंत न्यून स्तर पर ऋणात्मक सहसम्बन्ध प्रदर्षित करता है। अतः परिकल्पना 03 की पुष्टि नहीं होती।

परिकल्पना क्रमांक – 04

अनुसूचित जनजाति के छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक रूचि में धनात्मक सह सम्बन्ध पाया जावेगा।

व्याख्या

अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक रूचि परीक्षण के

प्रदत्तों की गणना से सहसम्बन्ध गुणांक का मान –0.279 प्राप्त हुआ। यह मान दोनों परीक्षण में न्यून स्तर का ऋणात्मक सहसम्बन्ध प्रदर्षित करता है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 की पुष्टि नहीं होती है।

निष्कर्ष (Conclusions)

1. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं ने उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर पर विद्यार्थी नहीं मिले इसका कारण ग्रामीण परिवेष में अभिभावकों में शिक्षा के प्रति रूचि का अभाव, गांव में उचित शैक्षिक वातावरण का न होना, रूढ़िवादी, सामाजिक बुराईयॉ, अशिक्षा, गरीबी, कन्या शिक्षा के प्रति पालकों का नकारात्मक दृश्टिकोण एवं इस क्षेत्र की समसामयिक एवं आंतरिक वातावरण भी हो सकते है।
2. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध नहीं पाया गया।
3. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं का सामाजिक–आर्थिक स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करता है।
4. अनुसूचित जनजाति के छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक रूचि में धनात्मक सह सम्बन्ध नही पाया गया।

सुझाव (Suggestions)

1. पाठ्यचर्चा एवं पाठ्यपुस्तकों को ग्रामीण परिवेश के स्तर के अनुरूप बनाया जाये जिससे अनुसूचित जनजाति के छात्राओं में अध्ययन के प्रति रूचि जागृत हो।
2. शिक्षिकाओं की संख्या शिक्षकों के बराबर हो जिससे ग्रामीण बालिकाओं को पढ़ने एवं सीखने के प्रति रूचि उत्पन्न हो सके।
3. पुस्तकें, कापियॉ व अन्य लेखन सामग्री निर्धन परिवार के छात्राओं को निःशुल्क उपलब्ध करायी जावें।
4. ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति एवं जनसंख्या के आधार पर बालिकाओं के लिए छात्रावास की व्यवस्था हो ताकि दूर दराज क्षेत्रों की बालिकाओं को इसका लाभ मिल सकें।
5. शासन द्वारा बनाई गई सामाजिक–आर्थिक व शैक्षिक विकास योजनाओं का व्यापक प्रचार प्रसार किया जावे तथा कागजी पत्रक आदान प्रदान के बजाए वास्तविक रूप से क्रियान्वत किया जावें।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. *भुवाल महेन्द्र कुमार (2002–03) – ''आदिवासी क्षेत्रों में प्राथमिक*
2. *स्तर के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्राओं के सामाजिक स्तर का उनकी स्वचेतना तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''।*
3. *राय, श्रीमती सीमा (1999–2000) – ''बस्तर जिले की अनुसूचित जनजाति के विभिन्न वर्गो के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन''।*
4. *राय, कृष्णकांत. (2016). अनुसूचित जनजाति में बालिका शिक्षा के लिये किए गए शासन के प्रयास. नई शिक्षा पद्धति. अंक 12. 138–141.*
5. *राय, कृष्णकांत. (2016). बैगा जनजाति में बालिका शिक्षा– एक अध्ययन. नई शिक्षा पद्धति, अंक 12. 129–131.*
6. *शुक्ला, कीर्ति. (2016). प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं की शैक्षणिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन– रीवां जिले के विशेष संदर्भ में . नई शिक्षा पद्धति. 9. 141–143.*